

सेंसेक्स में अब तक 4 कंपनियों का दबदबा

सेंसेक्स में कुछ पुरानी कंपनियों की जगह नई कंपनियां भी लेती हैं

दिग्गज कंपनियों का उतार-चढ़ाव बाजार को प्रभावित करता है



नयी दिल्ली, 04 जनवरी. बीएसई के सबसे प्रमुख सूचकांक और देश की अर्थव्यवस्था का बैरोमीटर कहे जाने वाले सेंसेक्स के 40 साल के इतिहास में महज चार कंपनियां ही ऐसी हैं जो शुरू से अब तक लगातार इसका हिस्सा रही हैं।

सेंसेक्स में कुल 30 कंपनियां होती हैं। ये बड़ी बाजार पूंजी वाली दिग्गज कंपनियां हैं जिनमें थोड़ा भी उतार-चढ़ाव पूरे बाजार को धारणा को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। सेंसेक्स में कभी-कभी कुछ पुरानी कंपनियों

की जगह नयी कंपनियों को भी ले लेती हैं। इस साल दो जनवरी को 40 साल पूरे करने वाले सेंसेक्स में चार कंपनियों ही ऐसी हैं जो इसकी शुरुआत से अब तक सूचकांक का हिस्सा रही हैं।

ये कंपनियां हैं - हिंदुस्तान यूनिलिवर, लार्सन एंड टूब्रो, आईटीसी और रिलायंस इंडस्ट्रीज. पहले सेंसेक्स में कौन

सी कंपनी शामिल होगी यह उनके कुल बाजार पूंजीकरण पर निर्भर करता था. यह क्रम अगस्त 2003 तक चलता रहा. सितंबर 2003 से यह कंपनी के मुक्त (फ्री-फ्लोट) बाजार पूंजीकरण के आधार पर तय किया जाने लगा. मुक्त बाजार पूंजीकरण की गणना में सिर्फ उन्हीं शेयरों को शामिल किया जाता है जो बाजार में कारोबार के

लिए उपलब्ध हैं. इसमें प्रवर्तकों और इनसाइडरों के शेयरों तथा प्रतिबंधित शेयरों को शामिल नहीं किया जाता है.

आईटीआईआई बैंक 10.13 प्रतिशत और रिलायंस इंडस्ट्रीज 9.72 प्रतिशत के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं. सेंसेक्स में इंफोसिस और भारती एयरटेल का भारांश 65 प्रतिशत है. अपने 40 साल के सफर में सेंसेक्स ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं. बीएसई द्वारा जारी श्वेत पत्र के अनुसार, सेंसेक्स के लिए पांच सबसे अच्छे साल 1988, 1991, 1999, 2003 और 2009 रहे हैं. वहीं, पांच सबसे बुरे साल 1995, 1998, 2000, 2008 और 2011 रहे हैं.

जब दो जनवरी 1986 को सेंसेक्स की शुरुआत हुई थी उस समय इसमें एसीसी, एशियन केबल्स, बल्लारपुर इंडस्ट्रीज, बॉम्बे बुमराह, बॉम्बे डाइंग, सिफ्ट टायर्स, सेंचुरी एस्प्रीजी, क्रॉमटन गोल्ला, ग्लेवसो स्मिथवलाइन फार्माशूटिकल्स, ग्रासिम, गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स, हिंडालको, हिंदुस्तान मोटर्स, इंडियन होटल्स, इंडियन ऑर्गेनिक केमिकल्स (अब एयुचुरा पॉलिस्टर्स), इंडियन रयॉन एंड इंडस्ट्रीज (अब आदित्य बिरला न्यूवो), आईटीसी लिमिटेड, किलोस्कर कमिन्स (अब कमिन्स इंडिया लिमिटेड), एलएंडटी, महिंद्रा एंड महिंद्रा, मुकुंद आयरन, नेस्ले, रिलायंस इंडस्ट्रीज, सिंधिया, सिमस, टाटा इंजीनियरिंग शामिल थीं.

बढ़े सोने-चांदी के दाम, निवेशक सतर्क

24 कैरेट सोना 1,35,970 रुपए, 22 कैरेट गोल्ड 1,24,650 रुपए

अंतरराष्ट्रीय बाजार और आपूर्ति का असर

चीन के निर्यात नियंत्रण से कीमतों में बढ़ोतरी

नई दिल्ली, 4 जनवरी. देश में सोने और चांदी की कीमतों में पंद्रह साल की शुरुआत में तेजी देखी जा रही है. बीते एक सप्ताह में 24 कैरेट सोना 750-760 रुपये और चांदी 3,100 रुपये तक महंगी हुई है. दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे प्रमुख शहरों में सोना नए उच्च स्तर पर पहुंच गया है.

अंतरराष्ट्रीय बाजार और वैश्विक आपूर्ति में बदलाव के चलते निवेशक और ज्वेलरी खरीदार इस समय सोने-चांदी की बढ़ती कीमतों पर नजर बनाए हुए हैं. देश में सोने और चांदी के दाम

निवेशकों की सोना-चांदी के रुझान पर नजर



निवेशकों और ज्वेलरी खरीदारों के लिए यह बढ़ोतरी खास मायने रखती है. अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने का हाजिर भाव 4,392.94 डॉलर प्रति औंस और चांदी का भाव 74.52 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया. विशेषज्ञों के अनुसार, चीन द्वारा चांदी के निर्यात पर नियंत्रण और वैश्विक आपूर्ति में असर से भाव आगे भी मजबूत रह सकते हैं. 2025 में सोने ने 73 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की थी और 2026 में भी इसकी मजबूती के संकेत दिख रहे हैं. निवेशक इस समय सोने-चांदी के रुझान पर नजर बनाए हुए हैं, जबकि ज्वेलरी खरीदार बाजार की बढ़ती कीमतों के बीच अपने निवेश का निर्णय सोच-समझकर कर रहे हैं.

रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है. मुंबई, चेन्नई और कोलकाता में भी 22 कैरेट गोल्ड का भाव 1,24,500 रुपये और 24 कैरेट का 1,35,820 रुपये दर्ज किया गया. एक सप्ताह में चांदी के दाम 3,100 रुपये बढ़कर 2,41,000 रुपये प्रति किलोग्राम हो गए हैं.



पीएम किसान योजना की 22वीं किस्त जल्द

नई दिल्ली, 4 जनवरी. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से जुड़े करोड़ों किसानों के लिए राहत भरती खबर है. केंद्र सरकार जल्द ही योजना की 22वीं किस्त जारी कर सकती है. हालांकि, इस बार भी सिर्फ उन्हीं किसानों के खातों में पैसा पहुंचेगा, जिन्होंने समय रहते जरूरी औपचारिकताएं पूरी कर ली हैं.

अगर आपने ई-केवाईसी, आधार-बैंक लिंकिंग या भू-सत्यापन नहीं कराया है, तो आपकी किस्त अटक सकती है. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत देश के करोड़ों किसानों को जल्द ही 22वीं किस्त मिलने की उम्मीद है. केंद्र सरकार ने वर्ष 2019 में इस योजना की शुरुआत की थी, जिसके अंतर्गत पात्र किसानों को हर साल 6,000 रुपये की आर्थिक सहायता तीन बराबर किस्तों में दी जाती है.

अब तक सरकार 21 किस्तें जारी कर चुकी हैं और अब किसानों को अगली किस्त का इंतजार है. एक रिपोर्ट्स के अनुसार, पीएम किसान योजना की 22वीं किस्त फरवरी 2026 में किसानों के खातों में ट्रांसफर की जा सकती है, हालांकि सरकार की ओर से अभी आधिकारिक तारीख घोषित नहीं की गई है. इस बार भी वही किसान योजना का लाभ ले पाएंगे, जिनका रिकॉर्ड पूरी तरह अपडेट और सही होगा.

योजना के तहत ई-केवाईसी कराना जरूरी

सरकार ने स्पष्ट किया है कि पीएम किसान योजना के तहत ई-केवाईसी कराना अनिवार्य है. जिन किसानों ने अब तक ई-केवाईसी नहीं कराई है, उन्हें अगली किस्त का लाभ नहीं मिलेगा. किसान यह प्रक्रिया पीएम किसान की आधिकारिक वेबसाइट या नजदीकी सीएससी सेंटर पर जाकर पूरी कर सकते हैं. इसके अलावा आधार-बैंक खाता लिंकिंग भी जरूरी बात है. जिन किसानों के बैंक खाते आधार से लिंक नहीं हैं, या जिनके खाते में नाम, जन्मतिथि जैसी जानकारी में गड़बड़ी है, उनकी किस्त रोक दी जा सकती है. साथ ही बैंक खाते में डीबीटी का सक्रिय होना भी जरूरी है. सरकार ने भू-सत्यापन को भी अनिवार्य किया है.

सब्सक्राइबर और ब्रॉडबैंड ग्रोथ में जियो सबसे आगे

टीआरएआई डेटा पर एनालिस्ट रिपोर्ट्स में जियो की लीड बरकरार

नई दिल्ली, 04 दिसंबर. टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया के हालिया जारी सब्सक्रिप्शन आंकड़ों पर अपनी राय जाहिर करते हुए देश दुनिया के एनालिस्ट्स और ब्रोकरेज हाउसेस ने अपनी रिपोर्ट्स में रिलायंस जियो को फिर से अब्ज बताया है.

ब्रोकरेज हाउसेस की रिपोर्ट्स के मुताबिक नवंबर में जियो ने कुल वायरलेस सब्सक्राइबर जोड़ने और एक्टिव यूजर्स की तादाद में बढ़ोतरी के साथ, इंडस्ट्री में शीर्ष स्थान हासिल किया है. जेफरीज, मॉर्गन स्टैनली और कोटक जैसे एनालिस्टों के अनुसार, जियो ने नवंबर 2025 में करीब 12 लाख नए सब्सक्राइबर जोड़े, जिससे वह लगातार नौवें

महीने भारतीय एयरटेल से आगे बना रहा. खास बात यह रही कि नवंबर में एकमात्र टेलीकॉम कंपनी जियो रही, जिसके एक्टिव सब्सक्राइबर बढ़े, जबकि अन्य कंपनियों को इस मोर्चे पर नुकसान उठाना पड़ा.

देश के 22 में से 17 टेलीकॉम सर्किल्स में जियो का वीएलआर शेयर बढ़ा. जम्मू-कश्मीर और पंजाब में जियो की ग्रोथ सबसे

ज्यादा दर्ज की गई. एनालिस्टों के विश्लेषण के अनुसार, नवंबर में जियो का एक्टिव वीएलआर मार्केट शेयर बढ़कर 43.7% हो गया, जो महीने-दर-महीने 25 बेसिस प्वाइंट की बढ़त दिखाता है. वहीं, एयरटेल, वोडाफोन आइडिया और अन्य ऑपरेटर्स के मार्केट शेयर में इस दौरान मामूली गिरावट देखी गई.

गेहूं मजबूत, दालों में गिरावट

नई दिल्ली, 04 जनवरी. घरेलू थोक जिस बाजारों में बीते सप्ताह चावल के औसत भाव घट गये जबकि गेहूं में तेजी रही. चीनी, दालों और खाद्य तेलों में भी नरमी रही. सप्ताह के दौरान चावल की औसत कीमत 21 रुपये टूटकर सप्ताहांत पर 3,808 रुपये प्रति क्विंटल रहा. गेहूं पांच रुपये मजबूत हुआ और सप्ताहांत पर 2,863 रुपये प्रति क्विंटल रहा.

आटा चार रुपये महंगा हुआ और 3,315 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गया. बीते सप्ताह खाद्य तेलों में गिरावट रही. वनस्पति 125 रुपये और सरसों तेल 103 रुपये प्रति क्विंटल फिसल गया. मूंगफली तेल की कीमत 86 रुपये और पाम



ऑयल की 52 रुपये प्रति क्विंटल घट गयी. सोया तेल के दाम 41 रुपये और सूरजमुखी तेल के 10 रुपये प्रति क्विंटल गिर गये. सप्ताह के दौरान मूंग दाल में 68 रुपये और तुअर दाल में 61 रुपये प्रति क्विंटल की नरमी रही. उड़द दाल का भाव 52 रुपये और मसूर दाल का 40 रुपये प्रति क्विंटल टूट गया. चना दाल 29 रुपये प्रति क्विंटल फिसल गयी.

ईवी का मोहभंग, लजरी में पारंपरिक वापसी

नई दिल्ली, 04 जनवरी. देश में जीएसटी 2.0 बदलावों का असर लजरी कार मार्केट पर साफ दिख रहा है. इंडस्ट्री सूत्रों के अनुसार इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की बिक्री में 2-3 प्रतिशत की गिरावट आई है, जबकि पारंपरिक इंजन वाली गाड़ियों की मांग बढ़ रही है.

मर्सिडीज-बेंज और बीएमडब्ल्यू जैसी लजरी कंपनियों का कहना है कि टोटल कॉन्स्ट ऑफ ओनरशिप और संचालन लागत के कारण ग्राहक अब पारंपरिक इंजन की ओर लौट रहे हैं. देश में लजरी कार खरीदारों के बीच इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) का आकर्षण कम होत जा रहा है. आठो इंडस्ट्री के एक जारी रिपोर्ट के अनुसार जीएसटी 2.0 के लागू होने के बाद ईवी की बिक्री में 2-3 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है.

एफपीआई ने बेची 7,608 करोड़ की इक्विटी

म्यूचुअल फंड में उनका शुद्ध निवेश 22.46 करोड़ रुपए रहा

मुंबई, 04 जनवरी. विदेशी फंडों की निवेशकों (एफपीआई) ने नये साल में पहले दो दिन के कारोबार में भारतीय बाजारों में 7,608 करोड़ रुपये की इक्विटी बेची. आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, एफपीआई ने जनवरी के पहले दो दिन में भारतीय पूंजी बाजार से 5,342 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की. शुद्ध निकासी का मतलब है कि उन्होंने जितनी पूंजी लगायी उससे ज्यादा निकाली है. एक तरफ जहां एफपीआई इक्विटी से पैसा निकाल रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ वे डेट और म्यूचुअल



फंड में निवेश बढ़ा रहे हैं. आंकड़ों के अनुसार, एफपीआई ने जनवरी में इक्विटी में 7,608 करोड़ रुपये का सप्ताहिक निवेश किया है.

समाचार विशेष

विजय को मिल गए 'तुरुप के इक्के'

तमिलनाडु में चुपचाप आकार ले रहा नया गठबंधन

चेन्नई. तमिलनाडु में 2026 में विधानसभा चुनाव होने हैं और फिलहाल राज्य में डीएमके गठबंधन की सरकार है. इस बीच राज्य की राजनीति में एक नया बदलाव देखने को मिल रहा है. जहां आमतौर पर तमिलनाडु में गठबंधन अचानक टूटते और बनते रहते हैं, वहीं इस बार एक नया राजनीतिक गठजोड़ धीरे-धीरे आकार लेता दिख रहा है. बीते कुछ हफ्तों में अभिनेता विजय की राजनीतिक पार्टी तमिलनाडु वेटी कज्जम (टीवीके) ने राज्य के दो हाशिये पर चले गए बड़े राजनीतिक चेहरों से संपर्क बढ़ाया है. ये नेता हैं पूर्व मुख्यमंत्री ओ पन्निरसेल्वम और अम्मा महल्ल मुनेत्र कज्जम (एएमएमके) के प्रमुख टीटीवी दिनाकरन.

अगर ये दोनों पूर्व अन्ना द्रमुक (एआईएडीएमके) नेता टीवीके में शामिल होते हैं, तो यह पार्टी के लिए अब तक का सबसे अहम राजनीतिक जुड़ाव माना जाएगा. इससे 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले टीवीके को एक गंभीर राजनीतिक खिलाड़ी के रूप में पहचान मिल सकती है. टीवीके और एएमएमके के कई वरिष्ठ नेताओं ने इन चर्चाओं की पुष्टि की है. यह बातचीत उस समय तेज हुई है, जब कुछ हफ्ते पहले पूर्व एआईएडीएमके नेता के ए सेंगोत्तैनम टीवीके में शामिल हुए थे, जो पार्टी से जुड़ने वाले पहले बड़े नामों में गिने जाते हैं.

दोनों दलों के वरिष्ठ पदाधिकारियों के मुताबिक बातचीत काफी आगे बढ़ चुकी है. एक वरिष्ठ टीवीके नेता ने कहा कि पार्टी की दिशा स्पष्ट है और

अब स्थितियों में आ गया बदलाव

खबरों के अनुसार, पन्निरसेल्वम के सामने दो विकल्प थे, डीएमके और टीवीके. लेकिन डीएमके का विकल्प लगभग बंद हो चुका है. एक वरिष्ठ डीएमके नेता ने सीट बंटवारे और अंदरूनी असंतोष का हवाला देते हुए कहा कि पार्टी उन्हें संयोजित नहीं कर सकती. बताया जा रहा है कि दिनाकरन ने कम से कम 20 सीटों की मांग रखी थी, जिसे डीएमके स्वीकार नहीं कर सकती. ऐसे में टीवीके ही उनके सामने एकमात्र

हैदराबाद. तेलंगाना में 2023 के अंत में विधानसभा हारने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव सक्रिय राजनीति से अलग हो गए थे. बीच में उनकी सेहत भी बिगड़ी थी, जिसकी वजह से वे सार्वजनिक जीवन से दूर रहे.

हैदराबाद से बाहर अपने फार्म हाउस में उनका ज्यादा समय बीत रहा था. उनकी ओर से बेटे केटी रामाराव और भतीजे हरीश राव पार्टी का राजनीति संभाल रहे थे. इसी बीच बेटे के कविता का भी विवाद हुआ. उन्होंने आरोप लगाया कि उनके पिता को पार्टी का भाजपा में विलय कराने की साजिश हो रही है. इसके बाद उनकी निकाल दिया गया और

उन्होंने तेलंगाना जागृति के नाम से पार्टी बनाई है. बहरहाल, दो साल के बाद के चंद्रशेखर राव ने अपना स्वघोषित वनवास समाप्त किया है. वे अपने फार्म हाउस से निकले और विधानसभा गए. वे वहां मुख्यमंत्री रेलवंत रेड्डी से मिले. दोनों ने हाथ मिलाए, कहा जा रहा है कि केसीआर अब राजनीति में सक्रिय होंगे. स्थानीय निकाय के चुनाव होने वाले हैं और उससे पहले उनकी सक्रियता से भारतीय राष्ट्र समिति यानी बीआरएस के नेताओं और कार्यकर्ताओं में जोश भरने वाली होगी. सबकी नजर इस पर भी है कि वे अपने परिवार का विवाद कैसे निपटाते हैं.

विशेष ममता ने निकाल ली कबीर की काट, भाजपाई सियासत की लगेगी वाट?

बाबरी मस्जिद पर भारी पड़ेगा महाकाल मंदिर

कोलकाता. पश्चिम बंगाल में एक महीने पहले झूझ से निकाले गए विधायक हुमायूँ कबीर राज्य में बाबरी मस्जिद बनाने की जोरदार वकालत कर रहे हैं. उनके कालों ने सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस को मुश्किल में डाल दिया है. हालांकि, ममता बनर्जी ने अब एक नई घोषणा करके कबीर की राजनीतिक चालों को करारा झटका दिया है. बाबरी मस्जिद के लिए हुमायूँ की मांग के बीच मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बंगाल के सबसे बड़े महाकाल मंदिर के

पवार के लिए राज्यसभा का रास्ता कहां से बनेगा?

मुंबई. अगले साल अप्रैल में महाराष्ट्र में राज्यसभा की सात सीटें खाली हो रही हैं, जिनमें से दो सीट शरद पवार की एनसीपी की हैं. एक सीट उद्धव ठाकरे की शिव सेना की है और एक सीट कांग्रेस की है. यानी विपक्षी गठबंधन महाविकास आघाड़ी की चार सीटें हैं. बाकी तीन सीटें महायुति की हैं, जिनमें दो भाजपा की और एक आरपीआई अटावले की है.

विपक्षी गठबंधन की चार सीटों में से एक सीट शरद पवार की है. उनकी पार्टी की फौजिया खान भी रिटायर हो रही हैं. उद्धव ठाकरे की पार्टी से प्रियंका चतुर्वेदी और कांग्रेस से रजनी पाटिल रिटायर हो रही हैं. अपने दम पर



विपक्षी गठबंधन को एक सीट मिल सकती है. उद्धव ठाकरे की कोशिश होगी कि सीट उनके खाते में जाए. वैसे भी उनकी पार्टी के सबसे ज्यादा 20 विधायक हैं. इसी आधार पर उनकी पार्टी ने मुख्य विपक्षी पार्टी का दावा भी किया है. दूसरी ओर आठ एमएलसी के दम पर कांग्रेस ने विधान परिषद में मुख्य विपक्षी दल का दावा किया है.

जाहिर है तीनों पार्टियां अपनी अपनी संख्या के हिसाब से दावेदारी कर रही हैं. उद्धव ठाकरे के 20, कांग्रेस के 16 और शरद पवार के सिर्फ 10 विधायक हैं. एक सीट जीतने के लिए 35 वोट की जरूरत है. उद्धव और कांग्रेस को मिला कर 36 वोट हैं. यानी वे अपने दम पर एक सीट जीत सकते हैं. विपक्षी गठबंधन को सिर्फ एक ही सीट मिलेगी. बची हुई छह सीटें महायुति के खाते में जाएंगी, जिनमें से तीन सीटें भाजपा के लेने की चर्चा है.

